एस.पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

गुरुकुल सन्देश

विद्यालय का मासिक मुखपत्र

अंक-85 www.gurukulkhurai.in माह- सितम्बर 2026

अभिव्यक्ति

-प्रयंक जैन (प्राचार्य)



बालक के सर्वांगीण विकास में साझी भूमिका

हमेशा आपसी सामंजस्य एवं सहयोग से ही कार्य सम्भव हो सकता है। यदि हम किसी कार्य को जबरदस्ती कराना चाहें तो वह सम्भव नहीं हो पाता। जब हम किसी कार्य के लिए आग्रह करते हैं, तब हमें चाहिए कि हमारी वाणी एवं व्यवहार भी संयमित हों। यदि वाणी में मृदुता और मिठास है तो कठिन से कठिन कार्य भी सहजता से सम्पन्न हो सकता है; अन्यथा बात बनने के बजाय बिगड़ भी सकती है। अतः किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पादित करने के लिए वाणी में मधुरता एवं व्यवहार में सरलता अपेक्षित है।

जब आपका पाल्य विद्यालय जाता है तो प्रत्येक अभिभावक की अपेक्षा रहती है कि बच्चा अच्छी तरह पढ़ाई करे, अच्छी बातें सीखे और अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो। परन्तु इन सभी अपेक्षाओं की पूर्ति में अभिभावक की भूमिका क्या है ? क्या अभिभावक अपने बच्चों के बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के लिए भी पर्याप्त प्रयत्नशील हैं? यदि हाँ, तो निश्चित रूप से धन्यवाद के पात्र हैं; और यदि नहीं, तो विद्यालय द्वारा किए जा रहे सर्वांगीण विकास के कार्यों में सहयोग प्रदान करें, ताकि आपके पाल्य की उत्कृष्टता के लिए शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों में आपका भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हो सके।

प्रत्येक विद्यालय में कार्यरत अध्यापक निरपेक्ष एवं निःस्वार्थ भाव से अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी के साथ हर सम्भव प्रयास करता है कि वह एक श्रेष्ठ, संस्कारित एवं शिक्षित नागरिक बने। एक पालक के रूप में आप अपने पाल्य के संबंध में विचार करते हैं और उसके अच्छे-बुरे भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं; परन्तु एक शिक्षक अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए समान रूप से चिंतित रहता है। शिक्षक की इसी महान भूमिका के कारण भारतीय संस्कृति में गुरु को अत्यंत पूजनीय माना गया है।

एक शिक्षक के मन में सदैव यही भावना सर्वोपरि रहती है कि उसके द्वारा अर्जित ज्ञान विद्यार्थियों तक पहुँचे और उनके जीवन को दिशा मिले। परिणामस्वरूप वह शिक्षक अपना ज्ञान, समय और सामर्थ्य अपने विद्यार्थियों के हित में समर्पित करता है। अन्तर केवल इतना रहता है कि कुछ विद्यार्थी शिक्षक द्वारा सिखाई गई बातों को पूर्ण रूप से ग्रहण कर पाते हैं और कुछ अपेक्षाकृत कम। इसमें शिक्षक की कमी नहीं होती, क्योंकि शिक्षक तो प्रत्येक विद्यार्थी को आगे बढ़ते हुए ही देखना चाहता है और उसे निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

यदि अभिभावक भी शिक्षक द्वारा कराए जा रहे शैक्षणिक, बौद्धिक, शारीरिक एवं संस्कारात्मक क्रियाकलापों में सहयोग प्रदान करें, तो निश्चित रूप से विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास अधिक प्रभावी ढंग से हो सकता है। विद्यालय और परिवार दोनों ही बच्चे के विकास के दो महत्वपूर्ण आधार हैं। इनमें से किसी एक की उपेक्षा होने पर विकास की प्रक्रिया अधूरी रह सकती है।

अतः यह आवश्यक है कि अभिभावक और शिक्षक एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि सहयोगी एवं सहभागी बनकर कार्य करें। शिक्षक विद्यालय में बच्चे को शिक्षा, संस्कार और दिशा देता है, जबकि अभिभावक घर में उसे वातावरण, अनुशासन और निरन्तर प्रोत्साहन प्रदान करता है। दोनों के बीच मधुर संवाद, आपसी सम्मान, विश्वास एवं सामंजस्य रहेगा तो बच्चे के भीतर आत्मविश्वास, अनुशासन, संस्कार और उत्कृष्टता का विकास निश्चित रूप से होगा।

बच्चे का उज्ज्वल भविष्य केवल विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि विद्यालय और परिवार की संयुक्त जिम्मेदारी है। आइए, हम सभी अपने-अपने दायित्वों का ईमानदारीपूर्वक निर्वहन करते हुए अपने पाल्यों को श्रेष्ठ विद्यार्थी ही नहीं , बल्कि श्रेष्ठ इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनाने का संकल्प लें।

"मौन कई बार वह उत्तर दे देता है, जो शब्दों से देना संभव नहीं होता।"

सम्पादकीय

-देवांश पस्तोर नवमीं (द)

मोबाइल के युग में किताबों का महत्व

आज अपने विद्यालय की पत्रिका 'गुरुकुल संदेश' का सितंबर माह का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं कक्षा 9वीं 'द' का छात्र हूँ और यह मेरा पहला अनुभव है जब मुझे संपादकीय लिखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसका पूरा श्रेय हमारे शिक्षकों को जाता है, जिन्होंने हमें यह दायित्व निभाने के लिए प्रेरित किया।

आज हम एक ऐसे विषय पर बात करेंगे जो हमारे दैनिक जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। आजकल हर किसी के हाथ में मोबाइल है और बच्चे किताबों से ज्यादा महत्व मोबाइल को दे रहे हैं, जिसके कारण किताबें कहीं पीछे छूटती जा रही हैं। यह आज के युग की एक गंभीर समस्या है।

मोबाइल की बैटरी तो खत्म हो सकती है, परंतु किताबों में समाहित ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता। मोबाइल का अत्यधिक उपयोग करने से बच्चों की आँखों और स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, जबकि किताबें पढ़ने से मन को शांति मिलती है। किताबें अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाकर जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाती हैं। मोबाइल पर हम चीजों को सिर्फ देखते हैं, परंतु किताबों से पढ़ा हुआ ज्ञान हमेशा के लिए हमारे मन-मस्तिष्क में बस जाता है। अतः मोबाइल का अनावश्यक उपयोग छोड़कर और किताबें पढ़ने की आदत अपनाकर हम अपने जीवन में एक बड़ा और सकारात्मक सुधार ला सकते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका को पढ़कर आपको एक सुखद अनुभव प्राप्त होगा। अंत में, मैं अपने सभी आदरणीय शिक्षकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन, शिक्षा और सहयोग से इस पत्रिका का लेखन व प्रकाशन संभव हो सका।

हमारा गुरुकुल, हमारा अभिमान

ज्ञान की ज्योति जलती है, संस्कारों की छाँव है, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय 'एस. पी. जैन गुरुकुल' हमारी शान और पहचान है।
यहाँ सपनों को मिलती है, नित मेहनत की उड़ान, गुरुओं के आशीर्वाद से, बनता है हमारा भविष्य महान।
शिक्षा के साथ संस्कारों का, मिलता है यहाँ उपहार, सदा खुशियों से महकता रहे, अपना यह गुरुकुल गुलज़ार।
गुरुकुल है ज्ञान का मंदिर, यहाँ बनता है चरित्र महान, शिक्षा, संस्कार और अनुशासन का यह अनूठा मेल है, सचमुच, हमारा गुरुकुल स्कूल दुनिया में सबसे अनमोल है!

माह सितम्बर श्रेष्ठता...



विवेकानंद सदन



मयंक जैन (छठवीं "अ")

"तुम पानी जैसे बनो जो अपना रास्ता ख़ुद बनाता है, पत्थर जैसे ना बनो जो दूसरों का भी रास्ता रोक लेता है"

अंतिम रोटी

-प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

एक रोटी का ही चमत्कार था शायद। इस रोटी से जिसे दिनभर की थकान के बाद एक बूढ़ी को अपना पेट भरना था। लेकिन उसने एक नन्हें बच्चे की भूख मिटाई और कितने सारे लोगों की! गर्मी की वह धुंधली शाम शहर के लिए सामान्य थी पर स्टेशन के पास बैठी बूढ़ी फूलवाली के लिए बहुत भारी क्योंकि वह अपने सिर पर एक बहुत ही भारी फूलों की टोकरी ढोई हुई थी। और वह दिनभर के परिश्रम के बाद कम से कम एक रोटी कमा पाई और फिर शाम को जब वह खाना खाने बैठी तो एक मासूम सा बच्चा उसे छुप-छुपकर देख रहा था। तो बूढ़ी औरत ने उसे देखा और उसे अपने पास बुलाया और उस बच्चे ने कहा मुझे माफ करें। तो बूढ़ी औरत ने कहा पर तुम मुझे देख क्यूँ रहे थे, तो वह डर-डरकर कहने लगा मैंने दो दिनों से खाना नहीं खाया आपको देखकर मुझे और भूख लगने लगी तो बूढ़ी औरत को उस बच्चे पर दया आ गई और उसने अपनी प्याज और एक सूखी रोटी उस बच्चे को दी और स्वयं ने पानी पी लिया। तो वह बच्चा कहने लगा कि दादी आपके पास स्वयं एक रोटी है वह भी आपने मुझे दे दी तो फिर आप क्या खाएंगी?

तो बूढ़ी औरत ने कहा बेटा अगर हम सबको खिलाएँगे तो भगवान हमें कभी भी भूखा नहीं रहने देंगे।

अतः इस फूल वाली औरत को शाम को एक बहुत बड़ा ऑर्डर मिल गया।

वर्षा

-कृष्णकांत राय | नवमीं (द)

"वर्षा मेरा पसंदीदा मौसम है। यह मौसम हमारे जीवन, वायुमंडल और भूमि के लिए अति-आवश्यक है। हिंदी महीनों के क्रम में यह आषाढ़ से भाद्रपद तक रहता है। परन्तु, इस वर्ष आषाढ़ माह में वर्षा थोड़ी कम ही हुई। अगर ऐसा ही रहता, तो हमें पानी के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती और यह हमारी फसलों के लिए भी लाभदायक नहीं होता।

वर्षा हमारी फसलों के लिए इसलिए लाभदायक है, क्योंकि अगर फसलों को पानी नहीं मिलेगा, तो फसलें खराब हो सकती हैं; और फसलें हमारे जीवन जीने व हमें जीवित रखने में अहम भूमिका निभाती हैं।

यह वायुमंडल और पर्यावरण के लिए भी बहुत लाभदायक है, क्योंकि अगर वर्षा नहीं होगी तो भौमजल (भू-जल) स्तर कम हो जाएगा। और यदि भौमजल स्तर कम हुआ, तो समझो कि पानी की भारी कमी होने ही वाली है।

अंत में, मैं यही कहूँगा कि वर्षा हमारे जीवन , भूमि और वायुमंडल के लिए बहुत आवश्यक है।

धन्यवाद!"

क्या आप जानते है.....

- आज भी दुनिया भर में लाखों लोग अपने पासवर्ड के रूप में सबसे आम और आसान शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें सबसे लोकप्रिय और खतरनाक पासवर्ड "123456" है।
- 'AI' शब्द का जन्म: 'Artificial Intelligence' (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) शब्द का पहली बार आधिकारिक इस्तेमाल 1956 में डार्टमाउथ कॉन्फ्रेंस (Dartmouth Conference) में जॉन मैकार्थी द्वारा किया गया था।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)

-श्रीकांत कुशवाहा | नवमीं (द)

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। जिसमें AI ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। AI एक तकनीक है जिसमें मशीनें इंसानों की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। AI का उपयोग हम कुछ भी नया सीखने में कर सकते हैं। किसी भी सवाल का जवाब हम AI से पूछ सकते हैं। AI का उपयोग मोबाइल फोन, खेती, रोबोटिक्स, शिक्षा, ऑटोमेटिक कार आदि में किया जा रहा है। AI का फुल फॉर्म "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस" (Artificial Intelligence) है। आज का युग वास्तव में AI का युग है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान की वह तकनीक है जो मशीनों और सॉफ्टवेयर को इंसानों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता देती है।

भाषा हमारी पहचान

-प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

भाषा केवल भाषा नहीं होती, वह सभ्यता-संस्कृति की वाहक होती है! भाषा हमारे स्वयं के साथ-साथ हमारे परिवार और देश तक के व्यवहार-संस्कार का पता देती है। दिलचस्प है कि संस्कृत में 'गाली' का संसार आज जैसा नहीं मिलता। वहाँ कटु वचन हैं। दुर्वचन हैं! अपशब्द हैं। पर पारिवारिक रिश्तों को लक्ष्य बनाकर अश्लील गालियों की परंपरा अनुपस्थित है। यह बड़ा प्रश्न है कि आज हम कैसी भाषा बोल रहे हैं। केवल जमाने या किसी पीढ़ी को कोस लेने से यह सवाल हल नहीं होगा! भाषा किसी भी देश, संस्कृति का चेहरा होती है। व्यवहार का आधार यही है। यह सारे मुखौटे हटा देती है। हमारी भाषा हमारी जिम्मेदारी है, क्योकि यह हमारे बारे में सब बता देती है।

मेरे इस पत्र को पढ़कर सोचिएगा जरूर...

मैहर की यात्रा (यात्रा वृत्तांत)

-पुष्पेन्द्र साहू | नवमीं (द)

खुरई से यहाँ पहुँचने में 5-6 घंटे लगते हैं। यह मध्यप्रदेश में स्थित है। यहाँ मैं गर्मियों में अपने परिवार के साथ गया था। यहाँ मैंने कई सारे दृश्यों को देखा, जैसे कि माँ शारदा का मंदिर। यहाँ तक जाने में 1000-1100 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। यहाँ माँ शारदा को 56 प्रकार का प्रसाद चढ़ाया जाता है और वही प्रसाद यात्रियों में बांटा जाता है। यहाँ का बाजार बहुत अच्छा है, इसमें कपड़े, मिठाइयाँ, और खाने की चीजें मिलती हैं। यहाँ जगह-जगह पर भंडारा चलता है। यह वैष्णो देवी के मंदिर का स्वरूप है। यह बहुत ऊँचाई पर बना है। यह यात्रा बेहद रोमांचक, ज्ञानवर्धक और यादगार रही। मैहर ऐतिहासिक स्थलों और संगीत विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ माना जाता है कि प्रसिद्ध योद्धा आल्हा और ऊदल ने यहीं साधना की थी। सामान्य दिनों में दर्शन का समय सुबह 5:30 से दोपहर 12:00 बजे और दोपहर 2:00 से शाम 7:30 बजे तक रहता है।

एक आलसी बच्चे की कहानी

-जयांश प्रजापति | नवमीं (द)

एक बार की बात है, एक गाँव में एक आलसी बच्चा रहता था। उसका नाम रामू था। वह इतना आलसी था कि कोई भी काम करने में उसे बहुत आलस आता था। वह दिन भर सोता रहता था। उसके माता-पिता उसे बहुत समझाते थे, लेकिन उस पर कोई असर नहीं होता था।

एक दिन उसके गाँव में एक साधु महात्मा आए। रामू के माता-पिता उसे साधु महात्मा के पास ले गए और उन्हें उसकी सारी बातें बताईं। साधु महात्मा ने रामू को एक जादुई छड़ी दी और कहा, "यह जादुई छड़ी है। तुम इससे जो भी मांगोगे, वह तुम्हें मिल जाएगा, लेकिन तुम्हें इसके लिए एक काम करना होगा। तुम्हें हर रोज सुबह जल्दी उठकर इस छड़ी को पानी देना होगा।"

रामू बहुत खुश हुआ। उसने साधु महात्मा से छड़ी ले ली और घर आ गया। अगले दिन सुबह वह जल्दी उठा और छड़ी को पानी दिया। छड़ी ने उसे बहुत सारे खिलौने और मिठाइयाँ दीं। रामू बहुत खुश हुआ। उसने छड़ी से बहुत सारी चीजें मांगी और छड़ी ने उसे सब कुछ दे दिया।

कुछ दिनों बाद, रामू फिर से आलसी हो गया। उसने सुबह जल्दी उठकर छड़ी को पानी देना बंद कर दिया। छड़ी ने उसे चीजें देना बंद कर दिया। रामू बहुत उदास हुआ। वह फिर से साधु महात्मा के पास गया और उन्हें सारी बातें बताईं। साधु महात्मा ने कहा, "यह जादुई छड़ी नहीं थी। यह तुम्हारी मेहनत का फल था। जब तुमने मेहनत की, तो तुम्हें फल मिला। जब तुमने मेहनत करना बंद कर दिया, तो तुम्हें फल मिलना बंद हो गया।" रामू को अपनी गलती का अहसास हुआ।

उसने साधु महात्मा से माफी मांगी और कहा कि वह अब कभी आलस नहीं करेगा।

उस दिन के बाद से रामू एक मेहनती बच्चा बन गया।



सावन मास

- प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

सावन मास भगवान शिव शंकर का अत्यधिक प्रिय मास है। इस मास में शिव जी के भक्त भगवान को प्रसन्न करने के लिए "कांवड़" भी ले जाते हैं और भगवान शिव का अपने-अपने घरों एवं मंदिरों में पूजा-पाठ करते हैं। सावन में स्त्रियों को हरे वस्त्र, चूड़ी, मेहंदी आदि पहनने का अधिक शौक रहता है। ऐसा माना जाता है कि हरे वस्त्र सावन में पहनने की मान्यता है, यह हरियाली को भी दिखाता है। सावन में चारों ओर हरियाली ही होती है। "सावन के सोमवार" की अपनी ही महिमा है, जैसा कि आपको पता होगा कि शंकर भगवान की पूजा सोमवार के दिन की जाती है और सावन भी शंकर भगवान का प्रिय माह है, तो अंत में यह बात है कि सावन सोमवार शंकर भगवान का प्रिय त्यौहार है। सावन में बहुत से त्यौहार होते हैं, जैसे कि: गौरी व्रत, नारियल पूनम, रक्षाबंधन, स्वर्ण कजलियाँ आदि। "इस माह में झूला झूलना एक परम्परा है।" यह माह हरियाली का माह होता है, यह माह मुझे अत्यधिक प्रिय है।

बदलती हुई दुनिया

नाम: अनुश्री लोधी | नवमीं (द)

बदल रही है दुनिया, बदल रहे हैं दुनिया के लोग।

जो रहते थे किताबों की दुनिया में,

आज रह रहे हैं मोबाइल की दुनिया में।

जब आते थे मेहमान, खोए हुए रहते थे,

पूरे घर-भर में गूंज उठती थी हा-ही-ही की गूंज।

पर अब पता नहीं क्या हो गया है?

जो रहते थे मगन मेहमानों में,

खोए रहते हैं वो अब इंटरनेट के जालों में।

पता नहीं क्या होगा अब...?

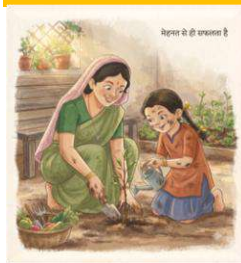
गुरुकुल के टीचरों की मेहनत

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)

गुरुकुल के टीचर किताबें नहीं पढ़ाते हैं, वो हमारे जीवन को भी बनाते हैं। वो सुबह सबसे पहले स्कूल आते हैं और शाम को सबसे बाद में जाते हैं। उनकी मेहनत क्लास में ही नहीं दिखती, घर जाकर भी हमारी कॉपी चेक करते हैं। अगर हम कोई गलती करते हैं, वो डांटते हैं पर साथ में बताते हैं कि बेटा तुम कुछ बन सकते हो। हमारी कॉपी पर लाल पेन से गलती नहीं सुधरती, हमारा भविष्य भी सुधरता है। यह हमें बहुत पसंद आया। जब वो गुड (Good) लिखते हैं तो लगता है हमने दुनिया जीत ली। जब हमारे कम मार्क्स आते हैं तो कहते हैं कोई बात नहीं आगे से कोशिश करो। वो हमें हार मानना नहीं सिखाते। गुरुकुल के टीचर हमारे ईश्वर जैसे हैं। फीस कम हो या ज्यादा, पढ़ाना कभी नहीं छोड़ते। हमारे टीचर बोलते हैं खूब पढ़-लिखकर अपने माता-पिता का नाम रोशन करना। उनकी एक-एक बात में सफलता होती है। उनकी मेहनत से ही आज गुरुकुल का हर बच्चा सपना देखता है। हमें गर्व है कि हम ऐसे गुरुकुल में पढ़ते हैं।

माँ...

- प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)



माँ शब्द में ही संसार बसा है, माँ वह है जो हमें जन्म देती है, माँ वो है जो हमें चलना सिखाती है। कठिनाइयों से लड़ना सिखाती है, माँ वह सुन्दर अहसास है जो बहुत ही प्यारा है। माँ के बिना जीवन, जीवन नहीं है, माँ से ही जीवन है।

मेरी माँ का नाम सरिता है, मेरी माँ ने मुझे पढ़ना सिखाया, लिखना सिखाया, एक बार जब मैं तथा मेरी माँ एक जगह गए थे तब वहाँ एक गाड़ी मुझे मारने वाली थी पर मेरी माँ मेरे आगे आ गई, माँ तो माँ है! इसे ही ममता कहते हैं। माँ चाहे कुछ भी हो जाए पर माँ कभी भी बच्चे पर आँच नहीं आने देती। अतः माँ के बिना कुछ भी नहीं है।

खुरई से विदिशा यात्रा...

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)

पिछले महीने मैं और मेरे दो दोस्त विदिशा घूमने के लिए गए। खुरई स्टेशन पर 7 बजे वाली ट्रेन पकड़ी। ट्रेन में बहुत भीड़ थी पर खिड़की वाली सीट मिल गई। ट्रेन चलते ही खेत दिखने लगे। हरे-हरे खेत और बीच-बीच में पेड़, ठंडी हवा आ रही थी, मन बहुत खुश था। रास्ते में 2 घंटे लगे। रास्ते में बासोदा आया, यहाँ कुछ लोग चाय-समोसा खाने उतरे। मैं भी अपने दोस्तों को लेकर चाय पीने उतरा, पर चाय बहुत गर्म थी पर अच्छी थी। ट्रेन फिर चल पड़ी, रास्ते में नदी और गाँव आए। लोग खेतों में काम कर रहे थे। कुछ बच्चे स्कूल जाते दिखाई दिए। दोपहर 1 बजे के आस-पास हम विदिशा पहुंच गए। विदिशा का स्टेशन बहुत सुन्दर था पर आदमी ज्यादा थे, तो हम और हमारे दोस्तों के साथ स्टेशन पर पानी की बोतल ली। पानी पीकर हम सब चल पड़े किला घूमने। किले में प्रवेश करते ही तोप दिखाई दी तो हम सब ने फोटो खिंचवाई। और किले के अंदर बहुत सुन्दर-सुन्दर मोटे पत्थर की दीवारें दिखाई दीं। और हमने सांची स्तूप देखा, देखते ही हमने दोस्तों से कहा, "पहले के जमाने के लोगों की कला बहुत सुन्दर और देखने लायक थी।"

यह कहकर हम चल पड़ते हैं यहाँ के मंदिरों को घूमने। यहाँ के मंदिर भी उसी पत्थर से बने थे जिस पत्थर से किला बनाया गया था। और हमने देखा कि किला शहर के बीचों-बीच बना है और पूरे किले के चारों तरफ दीवारें बनी हुई हैं। दीवारों पर जगह-जगह तोप रखने के लिए जगह बनाई गई थी ताकि दुश्मनों पर हमला किया जा सके। किले में अंदर जाने के लिए 3 बड़े दरवाजे थे और हर दरवाजे पर तोप रखी हुई थी। इसके निर्माण के बारे में पता नहीं पर यहाँ के लोगों से चर्चा की तो उन्होंने हमें बताया कि यह किला औरंगजेब ने बनवाया था और यह किला प्राचीनतम माना जाता है। किला घूमने के बाद हमारे दोस्तों के मन में स्टेशन वाली चाय पीने की याद आ गई तो हम तीनों किले के बाहर आकर एक टैक्सी बुलवाई और हम चल पड़े किले का आनंद लेकर अपने शहर की ओर। स्टेशन आते ही हमने टैक्सी वाले अंकल को 40 रुपये दिए और हम तीनों चल पड़े चाय पीने। चाय पीकर थोड़ी देर इंतजार किया और ट्रेन आ गयी। ट्रेन में बहुत कम भीड़ थी तो हमें सीट मिल गई। हम लोग एक सीट पर बैठ गए। बैठे-बैठे नींद आ गई। और रात के 11:35 हो रहे थे, खुरई स्टेशन आ गई। मैंने दोस्तों को जगाया।

उज्जैन

-यशोदा अहिरवार | नवमीं (द)

उज्जैन 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। उज्जैन का पूरा नाम अवंतिका है। उज्जैन क्षिप्रा नदी के किनारे पर बसा है। उज्जैन का एक बड़ा महत्व है। उज्जैन के पहले राजा विक्रमादित्य हैं। उज्जैन में श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग भारत के सबसे पवित्र शिव मंदिरों में से एक है। जहाँ भगवान शिव की पूजा महाकाल के रूप में की जाती है। उज्जैन के प्रसिद्ध मंदिर महाकालेश्वर, काल भैरव, हरसिद्धि, चिंतामन गणेश मंदिर हैं। यह सात मंदिरों में से एक है। उज्जैन को कालिदास की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। उज्जैन मंदिरों की नगरी है। यहाँ कई तीर्थ स्थल हैं। यह मध्य प्रदेश का पाँचवाँ सबसे बड़ा शहर है।

आज की व्यस्ततम दुनिया

-प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

आज सभी लोग अपने-अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो चुके हैं कि उन्हें किसी और की परवाह नहीं है। अगर वह परिवार के साथ थोड़ा समय निकाल पाते तो कितना सही होता, पर यह नहीं हो सकता है। आज कल की दुनिया में सब स्वार्थी हो चुके हैं, किसी और की जरूरत नहीं है। अब सभी मोबाइल, टी.वी. आदि में ही मनोरंजन करते हैं। अब सभी आलसी हो गए हैं, वह कभी भी अपना कार्य स्वयं नहीं करते बल्कि एक कामवाली आदि को रखते हैं। अब कोई परिवार में बोलचाल ही नहीं होता, सभी अलग-अलग हो चुके हैं और किसी को भी एक-दूसरे की परवाह नहीं है। झगड़ा होता तो वह सब मिलजुल कर रहते, अतः पहले से अब की दुनिया बहुत ही आलसी, स्वार्थी और अकेले रहना चाहती है।



सब अपने-अपने काम में व्यस्त, मोबाइल में खोए, एक-दूसरे से अनजान।

"धूल की तरह उड़ती हैं अफवाहें, सत्य जानने के लिए सब्र करना पड़ता है"

समय का महत्व

नाम: आस्था कलावत | नवमीं (द)

समय बहुत कीमती होता है। समय का सही उपयोग करना चाहिए। समय पर किया काम हमेशा अच्छा होता है। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है। अर्थात् जो समय की कद्र करता है वही अपने काम समय पर करता है। अपने हर काम का एक समय बनाना चाहिए मतलब हमें हर कार्य के लिए समय बांटना चाहिए। स्कूल जाना, होमवर्क करना और खेलने का समय तय करना चाहिए। जैसे हमें पढ़ाई, खेल और आराम के लिए समय तय करना चाहिए। समय पर सोना और उठना चाहिए। समय कभी वापस नहीं आता इसलिए इसका आदर करना चाहिए। समय की कद्र करने से जीवन में अनुशासन आता है। जो समय का ध्यान रखते हैं वे पढ़ाई में अच्छे तो होते ही हैं, उसके साथ वे अच्छे इंसान भी होते हैं। जो समय का सम्मान करता है वही जीवन में सफल होता है।

समय हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है, यह कभी किसी के लिए नहीं रुकता। जीवन में हर सेकंड मायने रखता है और खोया हुआ समय कभी वापस नहीं आता। समय पैसे से ज्यादा कीमती है। इसीलिए समय का सही उपयोग करें, न कि दुरुपयोग करें। यह कभी किसी के लिए रुकता नहीं है। खोया हुआ समय कभी वापस नहीं आता, इसीलिए हमें समय पर सही काम करने चाहिए क्योंकि समय सफलता की कुंजी है।

सावन माह

-जयांश प्रजापति | नवमीं (द)

सावन माह को श्रावण माह भी कहा जाता है। यह माह शिव भक्तों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। सावन माह में भगवान शिव की पूजा-अर्चना की जाती है। शिव भक्त सावन के सोमवार का व्रत रखते हैं। सावन माह में बारिश होती है और चारों तरफ हरियाली छा जाती है। सावन माह में कांवड़ यात्रा भी निकाली जाती है। कांवड़िये हरिद्वार, ऋषिकेश आदि तीर्थ स्थलों से गंगा जल लाकर भगवान शिव का अभिषेक करते हैं।

सावन माह में कई त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - हरियाली तीज, नाग पंचमी, रक्षाबंधन आदि। सावन माह प्रकृति से प्रेम और ईश्वर की भक्ति का महीना है। सावन माह में बारिश की बूंदें मन को तरोताजा कर देती हैं। सावन माह का प्राकृतिक सौंदर्य मनमोहक होता है। सावन माह में मोर नाचते हैं और कोयल गाती है। सावन माह में नदियों और तालाबों में पानी भर जाता है।

सावन माह में भगवान शिव की कृपा पाने के लिए शिव भक्त शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा, भांग आदि चढ़ाते हैं। सावन माह में भगवान शिव की आराधना करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। सावन माह में शिव भक्त भगवान शिव के भजनों और कीर्तनों में लीन रहते हैं।

मैं क्या हूँ?

-प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

क्या आपको पता है कि आप क्या हैं? क्या नहीं, आपने खुद से कभी पूछा है कि मैं कौन हूँ, मेरे जन्म का उद्देश्य क्या है? यदि नहीं तो मैं बताती हूँ!

हाँ, मुझे भी ज्यादा तो नहीं बल्कि थोड़ा तो पता है। हम सभी का जन्म इसलिए हुआ है कि हम अपने देश की रक्षा, परिवार का उत्तरदायित्व, दूसरों की मदद, दूसरों के प्रति प्रेम, अच्छा व्यवहार, रक्षा करें! अगर आप नारी हैं तो आपको पता ही होगा कि नारी जाति का जीवन कैसा होता है। हाँ, पुरुषों का भी जीवन थोड़ा-बहुत कष्टदायी होता है क्योंकि उनके ऊपर परिवार का भार एवं परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदारी आदि होती है। और हम देश की रक्षा के लिए जन्मे हैं तो ये दोनों कार्यों को क्यों करें? आपके अंदर भी यही सवाल होगा, फिर भी हमें दोनों कार्य करने पड़ेंगे क्योंकि यही हमारा कर्तव्य है।



मेरे सपनों का स्कूल

-आशुतोष मिश्रा | **नवमीं (द)**

स्कूल सिर्फ ईंट, पत्थर और सीमेंट की इमारत नहीं होती है। स्कूल वह जगह होती है जहाँ पर हमारे सपने साकार होते हैं। हमारे सपने पंख लगाकर उड़ते हैं। अगर मुझे कुछ दिन के लिए प्राचार्य बना दिया जाए तो मैं अपने सपनों का स्कूल बनाने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

सबसे पहले मैं स्कूल में प्रत्येक खेल के अनुसार मैदान (Ground) तैयार करवाऊँगा, क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ खेल जरूरी है। दोनों से तन और मन स्वस्थ रहें, ये जरूरी है। प्रत्येक कक्षा में स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर और आराम दायक कुर्सी होंगी। हफ्ते में एक दिन "बैग फ्री" होगा। इस दिन सिर्फ कहानियाँ, कविता, नाटक, खेल प्रतियोगिता और अपना हुनर दिखाने का दिन होगा।

मेरे स्कूल की लाइब्रेरी सबसे अच्छी होगी, वहाँ सिर्फ किताबें ही नहीं होंगी बल्कि कॉमिक्स और प्रेरणादायक कहानियाँ भी होंगी एवं आगे जिस बच्चे को जिस फील्ड में जाना है, उससे संबंधित पुस्तक उपलब्ध रहेंगी। हर महीने एक टैलेंट शो होगा जिसमें बच्चा बिना डरे अपना गाना, डांस या भाषण दे सके। यह सब होगा, लेकिन जरूरी बात, स्कूल में अनुशासन और स्नेह होगा। टीचर और हम बच्चे भी मेहनत से पढ़ेंगे।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि सपनों का स्कूल बनाना मुश्किल नहीं है, अगर हम सब मिलकर मेहनत करें तो हमारा स्कूल सपनों का स्कूल बन सकता है।

वक्त

-प्रज्ञा पटेल | **नवमीं (द)**

वक्त जीवन का सार है। वक्त पर किया गया कार्य सफलता प्रदान करता है, वहीं वक्त निकल जाने के बाद किया गया कार्य असफलता प्रदान करता है। एक महान् पुरुष के व्यक्तित्व की पहचान यही है कि वह अपना कार्य वक्त पर करता है और एक असफल व्यक्ति की पहचान यह है कि वह अपना कार्य वक्त निकल जाने पर करता है। अतः समय का सदुपयोग करना चाहिए तभी हम एक महान इंसान बनेंगे।

विद्यार्थी जीवन और अनुशासन

-जयांश प्रजापति | **नवमीं (द)**

विद्यालय में विद्यार्थी जीवन में समय बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी इस समय बहुत कुछ सीखते हैं। विद्यार्थी हमेशा समय पर विद्यालय जाते हैं। हमें अपने संस्कारों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए। हमें अपना स्वभाव अच्छा रखना चाहिए।

अनुशासन विद्यार्थी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। अनुशासन का अर्थ नियमों का पालन और समय का सही उपयोग है। हमें अनुशासनहीनता नहीं करनी चाहिए। हमें अपने कार्यों में अनुशासन में रहकर, लगन से दिए गए कार्यों को करना चाहिए।

अनुशासन और अपनापन

-देवांश पस्तोर | **नवमीं (द)**

एस. पी. जैन गुरुकुल मेरी पहचान है,
सुबह 10 बजे वाली घंटी से दिन की शुरुआत है।
प्रेयर के बाद क्लास में भागते जाना,
सर के आते ही सबका सीधा बैठ जाना।
खेल पीरियड का इंतजार सबको रहता है,
मैदान में दोस्तों के साथ शोर मचता है।
क्लास में पढ़ाई और कॉपी करने की जल्दी,
टेस्ट का रिजल्ट आते ही धड़कन तेज।
परीक्षा से पहले रात भर वाली मेहनत,
स्टेज पर समाचार व डांस।
यादें इतनी हैं कि गिन नहीं पाते,
हर दिन कुछ न कुछ नया सीखते जाते।
गुरुकुल का नाम ही अनुशासन सिखाता है,
शिक्षक डांटते भी हैं और सिखाते भी हैं।
आज भले ही बड़ी क्लास में पहुँच गए,
पर मन आज भी उसी गेट से जुड़ा है।
ये सिर्फ स्कूल नहीं, यादों का खजाना है,
मेरा एस. पी. जैन गुरुकुल, मेरा दूसरा ठिकाना है।

गाँव की यादें

-गगन लोधी | नवमी (द)

मेरा जन्म गाँव में हुआ।बचपन से लेकर आजतक गाँव में रहने में जो आनंद आता है, वह शहर में कहाँ। वहाँ दादा का प्यार, दादी का दुलार, डांट-फटकार, सबकुछ है। वह शहर में नहीं है। यहाँ (शहर में) प्रदूषण, अशुद्ध वायु है जो कि हमें हानि पहुँचाती है, लेकिन वहीं मेरे गाँव में ताजी हवा, स्वच्छ वातावरण है। वहाँ ये पार्क नहीं जिसमें हम ऐसे घूमते रहते हैं, गाँव में तो खेत-खलिहान होते हैं जो बहुत खूबसूरत होते हैं। और बसंत के महीने में तो और भी रौनक आ जाती है। कोयल की कूकू अहा! इतनी मीठी वाणी बहुत सुकून देती है। सावन में पेड़ों पर झूले डालना बहुत मजा आने वाला होता है। मेरे गाँव में हम सब साथ रहते हैं - चाचा-चाची, दादी-दादा, पिता-श्री, मेरे भाई-बहन। हम सभी हँसते-मजाक करते रहते हैं, न कोई लड़ाई न कोई झगड़ा। बस इतना ही नहीं हर उत्सव को अच्छे से मनाया जाता है - दुर्गा पूजन, गणेश पूजन, दीवाली, दशहरा, होली।

पूजन के समय जो खेल हम दोस्तों के साथ खेलते हैं, उनका मजा ही कुछ और है। हम हमारे दोस्तों के साथ पकड़म-पकड़ाई, पिट्ठू खेलते हैं। हम साथ में गाँव के फल... हाँ याद आया, मैं आपको एक बात बताना भूल गया कि हम लोग गाँव के फल जैसे कि खजूर, आम, जामुन, बेर लेने के लिए दौड़कर जाते थे ताकि हमें ज्यादा मिल सकें। गर्मियाँ आते ही हमारी बुआ लोग आ जाती हैं और उनके बच्चों (मेरे भाई-बहनों) के साथ हम बहुत मस्ती करते हैं। और गाँव में आइसक्रीम (कुल्फी) आते ही सब लेने के लिए भागते थे, यह कोई भला कैसे भूल सकता है।

गाँव में बुजुर्गों का सम्मान, उनकी आज्ञा का पालन करना, बाहर चौपाल पर बैठे हुए हँसना-खेलना। राहगीर को जल पिलाना, गाँव में बहुत से संस्कार दिए जाते हैं। हम सभी शाम के समय मंदिर जाते हैं। और आपको पता होगा बारिश आने पर गाँव की बिजली चली जाती है, परंतु हम बीजना (पंखे) से हवा कर लेते हैं और कुएं से पानी भी भर लेते हैं। इसलिए मेरा गाँव महान है! शहर से अच्छी गाँव की यादें हैं।

प्र. गाँव में कौन-कौन साथ रहता है?

प्र. गाँव के खेलों के नाम लिखें?

प्र. गाँव के फलों के नाम?

गुरुकुल सन्देश के अंक 84 में प्रकाशित वर्ग पहेलियों के उत्तर...

पृष्ठ 2 पर प्रकाशित "Think-Guess-Answer!" (1)A clock, (2) Rain, (3) A bottle, (4) A book

पृष्ठ 7 पर प्रकाशित- "बुंदेली पहेलियाँ" के उत्तर-

(1) करौंदा, (2) भटा, (3) राहर की दाल, (4) मऊगा (5) दर्पण,
(6) प्रश्न की पुनरावृत्ति के कारण प्रश्न निरस्त, (7) इल्ली, (8) पसीना (9) गाय/बछेड़ी, (10) तिरुला

पृष्ठ 8 पर प्रकाशित- "पहेलियाँ" के उत्तर-

(1) मशरूम, (2) पानी में, (3) डाँट/फटकार, (4) दीपक/दिया (5) बैलगाड़ी, (6) वनस्पति,
(7) केले का पेड़

पृष्ठ 10 पर प्रकाशित- "वर्ग पहेलियाँ-देशों के नाम" के उत्तर-(कुल देशों के नाम 26)

बाएँ से दाएँ (क्षैतिज पंक्तियों में):

रूस (L1) , क्यूबा (L1 - क, यू, बा के रूप में), इटली (L1), घाना (L2), जर्मनी (L2), ब्रिटेन (L3), अमेरिका (L4), भारत (L5), नेपाल (L5), श्रीलंका (L6), माली (L7), ऑस्ट्रेलिया (L7), कनाडा (L8), चाड (L9), जापान (L9)

ऊपर से नीचे (ऊर्ध्वाधर कॉलम में):

ब्राजील (C1), फ्रांस (C1), तुर्की (C1), कांगो (C3), चिली (C3), आयरलैंड (C4), यूनान (C5), इजरायल (C7), नॉर्वे (C8), स्पेन (C8), इंडोनेशिया (C9)

पचमढ़ी की यात्रा वृत्तांत

-जयांश प्रजापति | नवमीं(द)

पचमढ़ी घूमने की बहुत अच्छी जगह है। इसे सतपुड़ा की रानी भी कहा जाता है। इस जगह पर लोग बहुत दूर-दूर से घूमने आते हैं। हम अपने नजदीकी स्टेशन से ट्रेन द्वारा पिपरिया पहुंचे। पिपरिया से पचमढ़ी जाने के लिए टैक्सी ली और 100 रुपये में पचमढ़ी पहुंचे। पचमढ़ी पहुंचने के बाद एक होटल में रुके। फिर स्कूटर अथवा जीप से घूमने निकले।

पहले दिन अप्सरा वॉटरफॉल में नहाकर फिर निकले पांडव गुफा, जटाशंकर, बड़े महादेव, गुप्त महादेव। धूपगढ़ में सूर्यास्त देखकर एक होटल में रुके तथा दूसरे दिन सुबह 4-5 बजे जंगल सफारी की। बी वॉटरफॉल की ऊंचाई लगभग 35 मीटर है। धूपगढ़ से सूर्योदय तथा ग्रीन वैली घूमकर फिर तृतीय दिन रजत प्रपात वॉटरफॉल, बाइसन लॉज म्यूजियम, महादेव गुफा, हांडी खोह तथा अप्सरा विहार। पचमढ़ी में एक व्यक्ति का पैसा 6,000 से 10,000 के बीच लग सकता है, इसमें सभी चीजें आ जाती हैं जैसे भोजन, जीप, होटल तथा घूमने के सभी स्थान आ जाते हैं। यहाँ पर होटल की कीमत 2,500 रुपये से 7,000 रुपये से भी अधिक हो सकती है।

मध्य प्रदेश में सतपुड़ा का जंगल बहुत प्रसिद्ध है। सतपुड़ा की जगह बहुत खतरनाक है क्योंकि यहाँ कभी भी, कहीं भी जंगली जीव-जंतु आ सकते हैं। यहाँ पर पहाड़ी के बीच में से घुमावदार रास्ते हैं। यहाँ का प्रसिद्ध मंदिर चौरागढ़ महादेव मंदिर है। यह बहुत ऊंचाई पर स्थित है। इसकी ऊंचाई लगभग 1,326 मीटर से 1,330 मीटर तक है। नर्मदापुरम की दूरी लगभग 110 से 125 किलोमीटर है। यहाँ ट्रेन, कार, बस आदि से जा सकते हैं। यहाँ जाने का समय लगभग 2-3 घंटे का है।

नर्मदापुरम यह नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। यहाँ का सेठानी घाट बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ हर शाम नर्मदा आरती होती है। इसे पहले होशंगाबाद के नाम से जाना जाता था। यहाँ पर कई प्राचीन मंदिर स्थित हैं और यहाँ सभी त्यौहार और उत्सव मनाए जाते हैं। यहाँ का सबसे प्राचीन मंदिर श्री काले महादेव मंदिर है। यह लगभग 200 साल पुराना मंदिर है और यह नर्मदापुरम का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ पर हमेशा श्रद्धालुओं की भीड़ होती है। नर्मदापुरम का सबसे प्रसिद्ध त्यौहार नर्मदा जयंती है जो हर साल माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को फरवरी महीने के शुरुआती दिनों में मनाया जाता है। सेठानी घाट पर इस अवसर पर हजारों दीप जलाये जाते हैं और पूरे साल की सबसे बड़ी महाआरती होती है। यह त्यौहार बहुत उल्लास के साथ मनाया जाता है और दूर-दूर से लोग आकर नर्मदा के पवित्र जल में स्नान करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण

-संस्कार प्रजापति | नवमीं (द)

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है प्रकृति और उसके तत्वों जैसे कि वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति और जीव-जंतुओं को सुरक्षित करना। आज के समय में बढ़ता हुआ प्रदूषण, जंगलों की कटाई, औद्योगीकरण और जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। इससे जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना और प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि हो रही है। वर्तमान समय में मानव अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहा है, जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है।

पर्यावरण की रक्षा के लिए हमें पेड़ लगाने चाहिए, जल और ऊर्जा का संरक्षण करना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए और कचरे का सही तरीके से निपटान करना चाहिए। इसके साथ ही, जन जागरूकता फैलाना और सरकारी नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। पर्यावरण हमारा जीवन दाता है। यदि हम आज अपने पर्यावरण की रक्षा करेंगे तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, हरा-भरा और सुरक्षित जीवन मिलेगा। अतः हम सब मिलकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लें और इस दिशा में कार्य करें।

एक स्वच्छ हरा-भरा भविष्य सुनिश्चित करने के लिए, हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। यदि हम पर्यावरण को सुरक्षित रखेंगे तो ही जीवन सुरक्षित रह सकता है। इसलिए हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे। अधिक से अधिक पेड़ लगाए और उन्हें सुरक्षित रखे। स्वच्छ पर्यावरण से ही हमारा जीवन सुरक्षित रह सकता है।



पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ। जीवन को सुंदर बनाओ।



"असफलता केवल एक अवसर है सीखने का और फिर से उठकर आगे बढ़ने का"

ऊँच-नीच का भेद नहीं

-प्रज्ञा पटेल | नवमीं (द)

न छुआछूत की बात हो, आओ ऐसा धर्म बनायें।

जहाँ एक मजहब एक जात हो, सम्मान जहाँ न कुचला जाये।

मस्ती न जज्बात हो, आओ ऐसा धर्म बनायें।

जन्म से पहले एक ही थे, मरने पर एक ही होंगे,

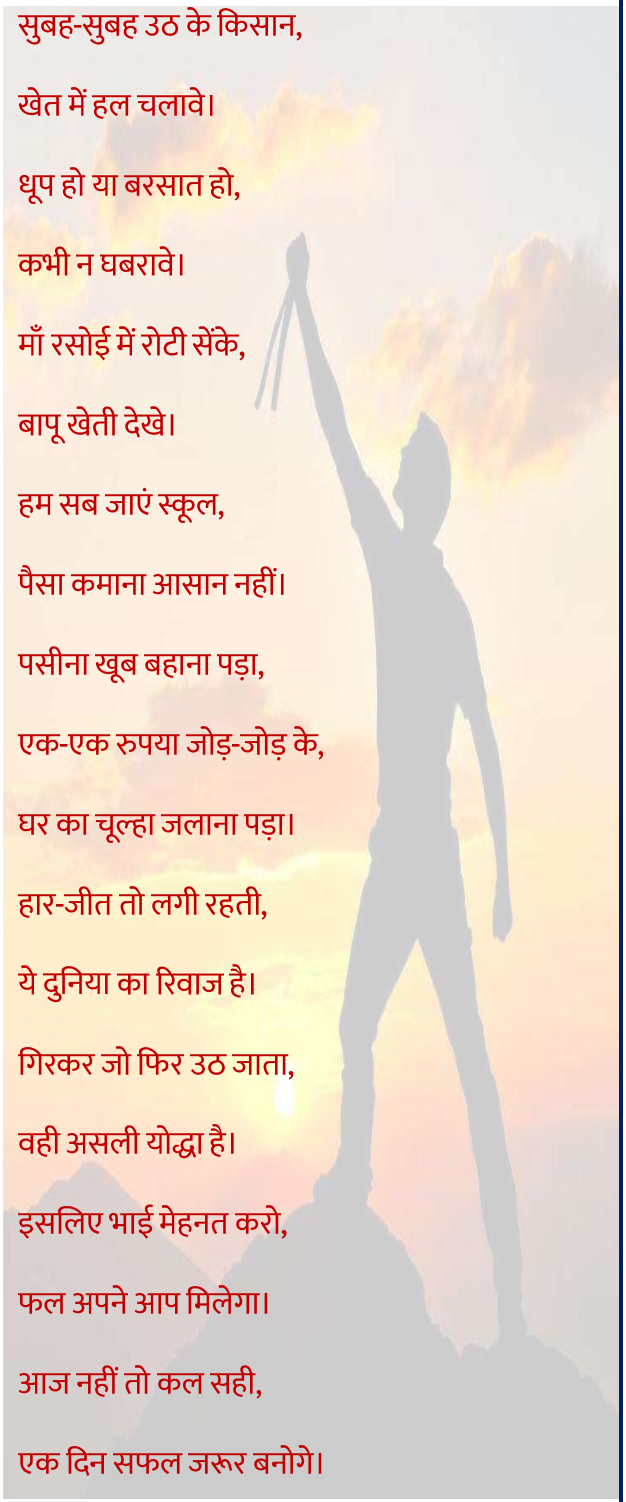
तो जात-पात के बोझ को फिर, क्यों कंधों पर ढोना है।

इंसानों पर न जहाँ आघात हो,

आओ ऐसा धर्म बनायें, जहाँ एक मजहब एक जात हो!

मेहनत का फल

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)



सुबह-सुबह उठ के किसान,

खेत में हल चलावे।

धूप हो या बरसात हो,

कभी न घबरावे।

माँ रसोई में रोटी सेंके,

बापू खेती देखे।

हम सब जाएं स्कूल,

पैसा कमाना आसान नहीं।

पसीना खूब बहाना पड़ा,

एक-एक रुपया जोड़-जोड़ के,

घर का चूल्हा जलाना पड़ा।

हार-जीत तो लगी रहती,

ये दुनिया का रिवाज है।

गिरकर जो फिर उठ जाता,

वही असली योद्धा है।

इसलिए भाई मेहनत करो,

फल अपने आप मिलेगा।

आज नहीं तो कल सही,

एक दिन सफल जरूर बनोगे।

इसीलिए समय का महत्व समझने वाला व्यक्ति जीवन में सफल होता है। जो समय का महत्व नहीं समझता वो असफल होता है। समय और समझ दोनों एक साथ बस किस्मत वालों को ही मिलते हैं, क्योंकि अक्सर समय पर समझ नहीं आती और समझ आने पर समय निकल चुका होता है।

मेरा गुरुकुल

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)

मेरा गुरुकुल

ईंट पत्थर का मकान नहीं,

ये तो सपनों का विद्यालय है।

यहाँ घंटी नहीं बजती,

यहाँ सफलता की आवाजें गूंजती हैं।

सुबह-सुबह प्रार्थना की आवाज,

दीवारों से टकराकर वापस आती है।

मास्टर जी का डांटना भी मीठा लगता है,

क्योंकि उसमें डर नहीं, प्यार छुपा होता है।

कॉपी पर इंक नहीं, मेहनत गिरती है,

ग्राउंड की धूल में भी इज्जत मिलती है।

सर हमें हार-जीत नहीं सिखाते यहाँ,

बस फिर आगे बढ़ना सिखाते हैं।

मेरा गुरुकुल छोटा सा है,

पर इसमें दुनिया भर का ज्ञान है।

यहाँ से निकला बच्चा,

कल के दिन किसी का सहारा बनता है।

श्री बागेश्वर धाम की कहानी

-राजा कुर्मी | नवमीं (द)

बागेश्वर धाम एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। पहले यह एक छोटा गाँव हुआ करता था जिसका नाम गढ़ा ग्राम था। वह एक ऐसा पिछड़ा गाँव था कि वहाँ व्यक्तियों के पास रहने के लिए पक्के घर नहीं थे। उन्हीं व्यक्तियों में से एक ब्राह्मण कुल में ऐसे व्यक्ति का जन्म हुआ जो पूरे गाँव का इतिहास बदलने वाला था, जो परिवर्तन उस गाँव के पूरे व्यक्ति मिलकर नहीं कर पाए वह परिवर्तन उन्होंने कर दिखाया। हाँ, मैं बात कर रहा हूँ श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी की। उनकी माता का नाम श्रीमति सरोज और उनके पिता का नाम रामकृपाल गर्ग था। वह एक ऐसे परिवार में पैदा हुए थे कि उनके पास रहने और खाने के लिए कुछ भी नहीं था। वे बताते हैं कि यदि किसी दिन हमारे यहाँ पूड़ी बन जाती थी तो ऐसा प्रतीत होता कि दीपावली आ गई या कोई त्यौहार आ गया हो। वे यह भी बताते हैं कि हम यदि किसी के घर गेहूँ मांगने जाएं तो वह हमें मना कर देते थे, लेकिन आज के समय में उन्होंने उस पूरे गढ़ा ग्राम का नक्शा ही बदल दिया। वे बताते हैं कि उन्होंने छोटे से लेकर अब तक हनुमान जी की पूजा की है। उनके गुरु सन्यासी बाबा जी थे। वे हनुमान जी से इतना लगाव रखते थे कि आज वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जिससे मिलने देश-विदेश के व्यक्ति तथा राष्ट्रपति भी गए हुए हैं। उनसे मिलने कई फिल्म स्टार के अलावा कई राजनेता भी आए हुए हैं। उन्होंने अपना और अपने धाम का नाम ऐसा बना दिया कि आज के समय में देश-विदेशों से पर्यटक भ्रमण करने आते हैं। श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी एक ऐसे कुल में रहकर भी अपनी हनुमान जी के प्रति भक्ति भावना और उपासना से आज विदेशों में घूम रहे हैं। यदि उनकी श्रीमद् भागवत की कथा हो जाए तो कम-से-कम 500,000 लोग पहुँच जाते हैं। यदि आज उस गढ़ा ग्राम को देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी शहर में आ गए हों। गुरुजी ने कई गौशालाएँ बनवाईं, उन्होंने कई हॉस्पिटल का निर्माण करवाया।

यदि आज के समय में देखा जाए तो बागेश्वर धाम एक छोटा सा ग्राम नहीं बचा बल्कि एक प्रसिद्ध स्थल बन गया है। वहाँ मंदिर जी के पीछे एक नीम का पेड़ लगा हुआ है, उस नीम के पेड़ की यह विशेषता है कि यदि किसी व्यक्ति या महिला को भूत-प्रेत, आत्मा परेशान करती है या उसके अंदर प्रवेश किए हुए है तो वह उस पेड़ से चिपक जाते हैं। वहाँ पर बालाजी सरकार के पास अर्जी भी बाँधी जाती है। यदि किसी को कोई समस्या या कोई मनोकामना हो तो अर्जी बाँधने के कुछ समय बाद वह मनोकामना पूरी हो जाती है। वहाँ पर गुरुजी श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी के माध्यम से दरबार लगता है। वहाँ पर यदि आप सच्चे मन से दरबार में बैठें तो आपकी अर्जी स्वीकार हो सकती है और गुरुजी पर्ची के माध्यम से पहले आपकी समस्या पर्चे पर लिख देंगे बाद में आपसे पूछेंगे कि क्या समस्या है और आप जो समस्या बताएंगे वही पर्ची पर लिखी होगी, यही वहाँ की विशेषता है। वहीं पर गुरुजी के माध्यम से भभूती भी बाँटी जाती है। वहाँ प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक भंडारा चलता रहता है।



नए विद्यालय का अनुभव

-अनुश्री लोधी | नवमीं (द)

परिवर्तन जीवन का नियम है, लेकिन एक छात्रा के लिए अपने पुराने विद्यालय और साथियों को छोड़कर नए विद्यालय में जाना हर्ष और दुविधा से भरा निर्णय होता है। यह बात मुझे तब गहराई से महसूस हुई, जब मैंने कक्षा नौवीं में एक नए विद्यालय में प्रवेश लिया।एक नए विद्यालय में, नए विद्यार्थी के रूप में अनजान माहौल और शिक्षकों को लेकर मेरे मन में एक अजीब सी घबराहट थी, तो साथ ही एक उत्सुकता भी चल रही थी। विद्यालय के पहले ही दिन जब नए छात्रों का प्रवेश हुआ, तो स्वागत दिवस मनाया गया। शिक्षकों का छात्रों के साथ आत्मीय संवाद और विद्यालय के हर्षोल्लास भरे माहौल ने मेरे अंदर की सारी झिझक और घबराहट को दूर कर दिया।

"सपने वो नहीं जो हम सोते वक्त देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते"

अमृतमयी संस्कृत वेदवीथिका प्रदर्शनी का भव्य आयोजन

विद्यालय में संस्कृत विभाग के तत्वावधान में 22 एवं 23 सितंबर 2026 को संस्कृत भाषा, साहित्य एवं भारतीय ज्ञान-परंपरा पर आधारित 'अमृतमयी संस्कृत वेदवीथिका' प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की समृद्ध विरासत तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना और उसे रचनात्मक एवं व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करना था। 'संस्कृतम् सर्वासां भाषाणां जननी' के संदेश के साथ आयोजित इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने मॉडल, चार्ट, हस्तकला एवं विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से संस्कृत के वैज्ञानिक, व्यावहारिक एवं आधुनिक स्वरूप को प्रदर्शित किया। प्रदर्शनी में संस्कृत साहित्य, चारों वेद, उपनिषद्, पुराण, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, योग, गणित, ज्योतिष, व्याकरण तथा प्राचीन भारतीय ग्रंथों से संबंधित अनेक मॉडल एवं चार्ट आकर्षण का केंद्र रहे।

विद्यार्थियों ने प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था, भारतीय शिक्षा-पद्धति तथा भारतीय ज्ञान-विज्ञान में संस्कृत के योगदान को भी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया। उस समय शिक्षा के केंद्र रहे नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के दृश्य के माध्यम से बौद्ध, जैन एवं वैदिक परंपराओं से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों को भी प्रदर्शनी में स्थान दिया गया। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों की जानकारी संस्कृत एवं हिंदी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत करते हुए अपनी रचनात्मकता एवं विषय -ज्ञान का परिचय दिया।

प्रदर्शनी में संस्कृत को आधुनिक जीवन से जोड़ने का विशेष प्रयास किया गया। यातायात के साधनों में लौहपथगामिनी (रेल), वृषभशकटम् (बैलगाड़ी), ट्रैक्टर एवं दुपहिया वाहन के मॉडल प्रस्तुत किए गए। दैनिक जीवन में प्रयुक्त वस्तुओं, खेल सामग्री तथा रसोई में उपयोग होने वाले मसाले, अनाज एवं सब्जियों के संस्कृत नामों के साथ आकर्षक स्टॉल लगाए गए। इस पहल के माध्यम से विद्यार्थियों ने यह दर्शाया कि संस्कृत केवल प्राचीन ग्रंथों तक सीमित भाषा नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में भी इसकी उपयोगिता और व्यापकता है।



विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रयंक जी जैन के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रदर्शनी में संस्कृत विभाग के शिक्षक श्री सिद्धांत जैन, श्री देवेंद्र जैन, सुश्री अनुभूति जैन एवं श्री सम्भव जैन ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। शिक्षकों के निर्देशन में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर आधारित मॉडल एवं परियोजनाओं को तैयार कर अपनी प्रतिभा एवं सृजनात्मकता का प्रदर्शन किया।



विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्रदर्शनी का उत्साहपूर्वक अवलोकन किया। प्रदर्शनी विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक एवं प्रेरणादायक अनुभव रही। विद्यार्थियों की मेहनत तथा संस्कृत विभाग के शिक्षकों के मार्गदर्शन से यह आयोजन ज्ञान, संस्कार, संस्कृति एवं सृजनात्मकता का सुंदर संगम बनकर सामने आया।



प्रदर्शनी ने यह संदेश दिया कि संस्कृत को मॉडल, कला, विज्ञान, संगीत एवं दैनिक जीवन से जोड़कर विद्यार्थियों के बीच इसे अधिक रोचक, जीवंत एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। 'अमृतमयी संस्कृत वेदवीथिका' के माध्यम से विद्यार्थियों ने भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्रति अपनी जिज्ञासा, गौरव एवं रचनात्मक दृष्टिकोण का प्रभावशाली परिचय दिया।

“सेवा संकल्प अभियान”

पटल सज्जा

इस माह की पटल सज्जा का विषय “सेवा संकल्प अभियान” के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सेवाकाल की योजनाएं एवं उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों से संबंधित चित्रकला या पोस्टर के माध्यम से किया गया; जिसमे सभी सदन के विद्यार्थियों द्वारा अपनी चित्रकला का प्रदर्शन पटल को सजा कर किया गया ।









'एकल भजन एवं सामूहिक लोकगीत गायन प्रतियोगिता' का आँखों देखा हाल

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)

हमारे विद्यालय एस. पी. जैन गुरुकुल, खुरई में दिनांक 29.09.2026 को एक बहुत ही सुंदर संगीत कार्यक्रम का आयोजन हुआ। हमारे स्कूल में चार सदन (दल) हैं — निवेदिता, अरविंदो, विवेकानंद और शिवाजी। इन चारों सदनों ने ही इस कार्यक्रम में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। हमारे सभी शिक्षकों ने मिलकर इसे बहुत अच्छे से सजाया और व्यवस्थित किया था।

एकल भजन गायन प्रतियोगिता सबसे पहले 'एकल भजन गायन' प्रतियोगिता हुई। इसमें अनेक बच्चों ने भाग लिया। सभी प्र तिभागियों ने भगवान के बहुत सुंदर गीत और भजन गाए। किसी ने श्री राम जी का भजन गाया, किसी ने श्री कृष्ण जी का, तो किसी ने हनुमान जी का भजन प्रस्तुत किया। सबने बहुत मीठे -मीठे स्वर में अपने भजन गाकर पूरे माहौल को भक्तिमय कर दिया।

सामूहिक लोकगीत गायन प्रतियोगिता इसके बाद 'सामूहिक लोकगीत गायन' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में चारों सदनों के बच्चों ने एक साथ मिलकर अपनी संस्कृति से जुड़े मनमोहक लोकगीत बहुत अच्छी धुन में गाए। जब सभी बच्चों ने एक सुर में पारंपरिक लोकगीत गाया, तो ऐसा लगा जैसे पूरा विद्यालय ही संगीत और लोक-संस्कृति के रस में डूब गया हो। सभी ने बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। इस सामूहिक गायन में चारों सदनों की शानदार सहभागिता थी, और यह प्रतियोगिता देखकर हम सबको बहुत आनंद आया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रामस्वरूप पाराशर जी ने भी अपने कंठ से मधुर प्रस्तुति दी।

सभी बच्चों और शिक्षकों ने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाते हुए खूब तालियाँ बजाईं। अंत में प्राचार्य जी ने कहा कि ऐसे मधुर भक्ति-गीत और लोकगीत सुनकर मन को बहुत शांति मिलती है ।



“पढ़ाई में सफलता कठिन मेहनत और समर्पण से मिलती है”

विज्ञान के रंग, नाटक के संग: सदनवार सामूहिक नाटक प्रतियोगिता

-वेदांत पस्तोर | नवमीं (द)

हमारे विद्यालय में विज्ञान पर आधारित एक शानदार 'सामूहिक नाटक प्रतियोगिता' का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के चारों सदन— निवेदिता, अरविंदो, विवेकानंद और शिवाजी दल ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। सभी शिक्षकों ने अपने-अपने सदन से बच्चों को चुना और उन्हें इस प्रतियोगिता के लिए बहुत अच्छी तैयारी कराई।

इस नाटक प्रतियोगिता की सबसे अच्छी बात यह थी कि इसमें बड़ी कक्षा के बच्चों के साथ-साथ छोटी कक्षा के बच्चों का भी बहुत बड़ा योगदान था। सभी नाटक पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित थे। किसी दल ने अपने नाटक के माध्यम से बताया कि विज्ञान की मदद से हम चाँद पर कैसे पहुँचे, किसी ने इसरो (ISRO) की अद्भुत दुनिया की झलक दिखाई, किसी दल ने अंधविश्वास (तांत्रिक विद्या) और विज्ञान के बीच का अंतर समझाया, तो किसी ने हमारे दैनिक जीवन में विज्ञान के चमत्कारों और उपयोगों को मंच पर प्रस्तुत किया।

सभी बच्चों ने बहुत मेहनत की थी और उनकी यह लगन देखकर वहाँ उपस्थित सभी लोगों को बहुत अच्छा लगा तथा एक नई सीख भी मिली। मंच पर छोटे बच्चों का आत्मविश्वास और शानदार अभिनय देखकर बड़े बच्चे भी हैरान रह गए। सभी सदनों के नाटक बहुत ही मनोरंजक और शिक्षाप्रद थे।









सभी बच्चों का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। सामूहिक गायन और इस नाटक प्रतियोगिता से हमने यह सीखा कि जब हम सब मिलकर (टीमवर्क के साथ) कोई काम करते हैं, तो वह कार्य बहुत सुंदर और सफल होता है। विज्ञान के नाटकों ने हमें समझाया कि विज्ञान हमारे जीवन के लिए कितना आवश्यक है।

इसके साथ ही, जो बच्चे पहली बार मंच पर जाकर गायन या अभिनय कर रहे थे, उनके मन का डर (Stage fear) अब पूरी तरह खत्म हो गया है और वे सबके सामने आत्मविश्वास के साथ बोलना सीख गए हैं।

मैं आशा करता हूँ कि हमारे विद्यालय का नाम पूरे विश्व में फैले और हमारा 'एस. पी. जैन गुरुकुल' निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

बालिकाएं स्पर्श से समझती हैं अच्छा, बुरा- पुलिस को मित्र समझो



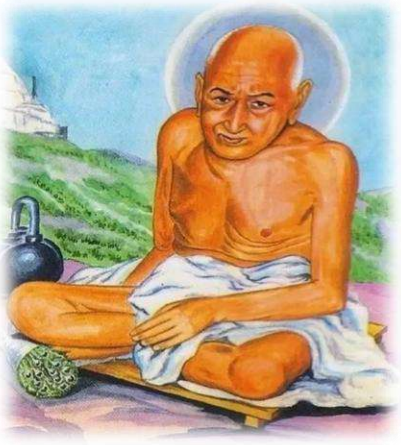
विद्यालय में ग्रामीण थाना की ओर से उप निरीक्षक दीक्षा शर्मा ने - माध्यमिक विभाग के - छात्र-छात्राओं को मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि बालिकाएं स्पर्श से अच्छा - बुरा समझती हैं। वह पुलिस को अपना मित्र - समझें। अपनी परेशानी बिना झिझक अभिभावक, शिक्षक, पुलिस से साझा करें। किसी व्यक्ति के स्पर्श से असहज महसूस हो तो तुरंत प्रतिकार करें। अपने से बड़ों को तुरंत बताएं। किसी भी तरह की शिकायत हो या सलाह चाहिए तो हेल्पलाइन नंबर पर फोन कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि समय-समय पर विद्यार्थियों से चर्चा जरूरी है। इससे झिझक दूर होती है। बच्चे दोस्ताना माहौल में अपनी बात रख पाते हैं।

विद्यालय की ओर से संस्था प्राचार्य प्रयंक जैन ने सभी आगंतुक अतिथियों का अंगवस्त्र और स्मृतिचिह्न देकर सम्मान किया, आभार जताया।

"जो लोग मेहनत करते हैं, वे किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं"

"छात्रा राधिका कुर्मी ने क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी जी के जीवन, उनके महान त्याग, शिक्षा प्रसार और समाज सुधार के कार्यों पर बहुत ही सुंदर और प्रेरणादायी वक्तव्य प्रस्तुत किया।



क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी जी









"कृष्ण जन्माष्ठमी पर मटकी फोड़ प्रतियोगिता"

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में 'अन्ताक्षरी' और विशेष 'मटकी फोड़' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें सभी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कृष्ण भजनों और लोकगीतों पर आधारित गायन श्रृंखला से हुआ। बच्चों की सुरीली प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय कर दिया। इसके पश्चात कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'मटकी फोड़' प्रतियोगिता हुई। इसका प्रारूप बेहद रोचक था — मटकी जमीन पर रखी गई थी और विद्यार्थियों को आँखों पर पट्टी बाँधकर उसे फोड़ना था। मित्रों के शोर और इशारों के बीच, पट्टी बाँधे बाल-गोपालों का मटकी का अंदाजा लगाना और उसे फोड़ने का प्रयास बेहद रोमांचक और मनोरंजक रहा।

अंत में विद्यालय के आदरणीय प्राचार्य जी ने सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को जन्माष्टमी के पावन पर्व की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने उद्बोधन में बच्चों को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से सत्य, कर्म और निस्वार्थ मित्रता की सीख लेने के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय से सम्बंधित महत्वपूर्ण लिंक

- विद्यालय की वेबसाइट हेतु- https://gurukulkhurai.in/
- विद्यालय के ERP सॉफ्टवेयर हेतु - https://gurukulsenior.imswala.com/login
- विद्यालय के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म हेतु –

  Instagram - https://www.instagram.com/gurukulschoolkhurai/

  Facebook - https://www.facebook.com/share/1CHEJaPK8X/

  YouTube - https://youtube.com/@spjaingurukul?si=qMuhMIkk_wmhw4tf

"अनुभव एक कठोर शिक्षक है क्योंकि वह पहले परीक्षा देता है, बाद में पाठ"

दिमागी पहेली

किसी पंक्ति में "121" गलत लिखा है, उसे ढूँढें!

अनुश्री लोधी | नवमीं (द)

121	121	121	121	121	121	121
121	121	121	121	121	121	121
121	121	121	121	121	121	121
121	121	121	121	122	121	121
121	121	121	121	121	121	121
121	121	121	121	121	121	121

ध्यान से देखें, क्या आपको वह अलग संख्या मिल गई? 👀

अनुश्री लोधी | नवमीं (द)

सब्जियों के नाम ढूँढें

अपनी पसंदीदा सब्जी का नाम ढूँढें

ग	छ	पु	क्ष	ज	न	ल	घ	मू	ड़	ह	ब	ए	ओ	प्या	ज
भि	दी	म	ह	ट	सू	पा	र्य	ली	को	बी	म	थु	ग	बे	प
ना	घा	ठ	भिं	ड	ह	ढ	ल	म	च	ञ	क	ला	आ	ध	र
त	ह	ड़ी	क	ळ	ल	म	क	क	ण	च्या	प	चा	नि	ता	म
ला	फ	पो	म	छ	प	ल	ष	री	छ	ज	र	या	लू	आ	ल
रे	ब	भ	ई	र	मी	य	ल	पी	प	ञ	प	भ	य	ढ	टिं
क	ट	ह	ल	सा	म	कुं	ता	य	ज	ता	भ	फू	र	ब	डा
हु	श	मा	म	ह	म	स्य	द	प	ब	शि	ड	म	ल	भी	भी
जि	र	नीं	ट	ज	ल	म	स	ख	म	ड	ब	र्ब	टी	गो	ध
थ	मी	ल	बू	र	ल	लौ	की	ला	य	झ	ष	प्र	ला	व	भी
ह	ठ	ले	ब	धु	अ	ग	मि	ग	क्ष	म	ड	प	ठ	घ	म
र	चु	कं	द	र	द	र्च	ट	र्च	स	ब	श	घ	बैं	ग	न
ब	श	प	ट	य	र	क्ष	चि	चिं	डा	न	फ	रू	त	श	अ
ष	ल	प्र	श	तु	क	च	फ	ल	ह	म	ब	टिं	म	ट	र
खी	ज	न	म	श	श	फें	प	बीं	स	भें	द	ड	प	ज्ञ	ज
रा	म	तो	र	ई	भ	ज	ब	स	ढ	ब	थी	सी	थ	छ	गा

✨ विशेष आकर्षण:

प्रस्तुत पत्रिका में समाहित सभी लेख, विचार और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ कक्षा 9वीं 'द' के होनहार विद्यार्थियों के स्वतंत्र और मौलिक प्रयास हैं।

✨ सम्पादक मंडल -

श्रीमान प्रयंक जैन (प्राचार्य)

श्रीमती भारती राठौर (शिक्षिका)

डॉ. अमित नेमा (शिक्षक)

"मेहनत का फल और समस्या का हल देर से ही सही, मिलता जरूर है"